

## शिक्षा में जैपड़र और समावैशी परिप्रेक्षण (F-6)

[इकाई - 1 समावैशी शिक्षा की समझ]

\* सार्वतीय समाज में समावैशन और अपवर्जन के विचारने का रूप (हाइशार्ट का समाज, जैपड़र, विशेष आवश्यकतावाले बच्चे - दिव्यांगजन)

समावैशन सुकृत शिक्षा का अर्थ है समान्य विद्यार्थीयों के विशिष्ट बालकों को समान्य नियामित कक्षाओं और विद्यालयों में शिक्षा देना। विशिष्ट बच्चों के लिए उनके हिसाब से सहायक उपकरण का व्यवस्था करना। तथा उनके लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षक शिक्षक का सीधा व्यवस्था करना।

अपवर्जन का किसी अनौपचारिक क्रिया है, जो विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों को केवल शारीरिक या मानसिक रूप से ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी कीण कर देता है। उन्हें शिक्षा से वंचित कर देता है। और उन्हें किसी काम के लाभक नहीं माना जाता है।

⇒ हांशिर का समाज

हांशिर के समाज में वंचित वर्ग आते हैं। वंचित वर्ग का अर्थ अमाव या विहीन। ऐसा व्यक्ति या समाज जिसकी सुविधाओं से अलग कर दिया गया है या वो सुविधाओं को लाना नहीं ले पा रहे हों। उनकी पहुंच वहाँ तक नहीं हुई हो। ऐसे में इनका प्रथा जीवन गरीबी में ही बीत जाती है। और यह अशिक्षा ही रह जाते हैं।

वंचित वर्ग के प्रकार निम्न हैं—

- i) माता - पिता के बच्चे ही से वंचित—
- ii) शारीरिक विकलांगता—
- iii) मानसिक विकलांगता—
- iv) सांस्कृतिक होट से वंचित—
- v) आर्थिक होट से वंचित—
- vi) सामाजिक होट से वंचित वर्ग—

⇒ भारतीय समाज में जैपड़

जैपड़ का अर्थ है महिला और पुरुष। जब महिला और पुरुष में चोदमाव किया जाता है तो उसे लिंग चोद कहते हैं। हमारे समाज में बहुत लिंग चोद किया जाता है और ऐसी भी महिलाओं की कमी नहीं है जो देश का नाम राशन कर रही हैं। लगभग सभी लोगों में महिला प्रमुख स्थान पर कम कर रही हैं। पिछले समाज में लिंग चोद होते हैं। इसको दूर करने के लिए

सरकार ने विचान्न का नून मी बनाये हैं। जिससे इसमें लुढ़ झुधार आये हैं। इसे पुरी तरह छत्म करने के लिए समाज की अपना कदम बढ़ाना होगा।

### ⇒ विशेष आवश्यकतावाले बच्चे - दिल्लीयांगाजन

ऐसे बालक जो शारीरिक, मानसिक, शौकियक कंव सामाजिक गुणों की इच्छा से अन्य बच्चों से भिन्न होते हैं, वह विशाल प्रतिक कहलाते हैं। ये बालक अपनी क्षमताओं और ग्रीष्मताओं, उच्चवर्णार्थी वर्गों से आदि से अपनी आय के बच्चे से भी अलग रह जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे का विकास या न इतना तीव्र या ज्ञादा होता है कि वे अन्य बच्चों से आगे निकल जाते हैं या इतना कम होता है कि वे बहुत पीछे रह जाते हैं।

जिन बालकों में शारीरिक कीमियाँ, मानसिक कीमियाँ होती हैं उन्हें दिल्लीयांग बालक कहते हैं। वे अपने इस कीमियों के वजह से पहाड़ में पीछे रह जाते हैं। इनपर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उन्हें अपने जिंदगी थापन करने के लिए सहायक उपकरणों को जरूरत होता है। विद्यालय में यह सामान्य तरीके से शिक्षा ग्रहण कर सके इसके लिए विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों का बहाली मी किया जाता है।

\* कक्षाओं में विविधता और असामन्ता की समझः पाठ्यचयात्रामें और शिक्षणशास्त्रीय संदर्भ में पाठ्यचयात्रामें संदर्भ में

**प्रार्थः** हर तरह की शिक्षण आधिगम पाठ्यक्रम पर आधारित होता है। शिक्षण का उद्देश्य कि सफलता और असफलता जी पाठ्यक्रम पर आधारित होता है। पाठ्यक्रम बालकों की शिक्षण आधिगम से संबंधित मानक आवश्यकताओं का पूर्ण करने वाला होना चाहिए। जिसमें उस दृष्टि और कौशल का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए, जिसे बालक प्राप्त कर सके। पाठ्यक्रम बालक के हैं- ही विचानन कौशलों को निखारकर सामूहिक बाने में मददकार होता है। ऐसे में ये जरूरी हैं कि पाठ्यक्रम सभी बालकों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाला हो।

समावेशी शिक्षा संबंधी पाठ्यक्रम जी इह युनिविश्यत करता है कि जिन मानकों की तहत पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। वे मानक इतने वर्तमान तथा व्योपक हो कि बालकों के आधिगम से संबंधित जरूरते पूर्ण हो सकें। यह मूल रूप से शाश्वत, तैर पर निश्चकत बट्चों के रूप को कंचा उठाने में उपयोगी होता है। इससे उनमें विचानन पूकार के कौशलों का विकास होता है। पाठ्यक्रम की विशेषताएँ निम्न हैं-

- i) पाठ्यक्रम में व्यवहारिकता होना चाहिए।
- ii) समान्य बालकों के सामूहिक-सामूहिक विशेष बालकों को ध्यान में रखना चाहिए।
- iii) पाठ्यक्रम अन्यग्राह से छोड़कर होने वाला होना चाहिए।

## शिक्षण शास्त्रीय संदर्भ में-

समाज में अप्रत्यक्ष रूप से इतना चेदमाव है कि समाजिक समावेशीकरण करना अत्यंत कठिन हो रहा है। यदि समाज समावेशीकरण चाहता है तो उसे समान्य व विशिष्ट बालकों के मध्य चेदमाव की खेत्रों करना होगा। जब तक चेदमाव खेत्र नहीं होगा तब तक समावेशीकरण संभव नहीं है।

समाज के सभी नागरिकों को समावेशीकरण के लिए आगे आने की जरूरत है। इस कड़ी में शिक्षक की अहम चुम्बिका होती है। शिक्षक की अवधि अपने कर्तव्य के प्रति इमानदार होने की आवश्यकता है। शिक्षकों की उसके विकास में सहयोग करना चाहिए। उन्हें उचित अवसर देना चाहिए। जिससे विशिष्ट बालकों के मन में आत्मविश्वास बने। वे और वे भी कृक जो प्राकृतिक नागरिक बन जाएं। अगर शिक्षक विशिष्ट बालकों के प्रति सहानुभूति रखें तो अन्य बालक भी उनके प्रति सहानुभूति रखना शीघ्र जाते हैं।

\* समावेशी शिक्षा की अवधारणा व आवश्यकता समावेशी शिक्षा में सभी विद्यार्थी की समान शिक्षा दी जाती है। सभी विद्यार्थी का अर्थ है कि ऐसे बच्चे भी जो शाश्वतिक विकल्पों ही या कोई शाश्वतिक कीमाओं हों, जैसे सुनाई नहीं देना चलने में कठिनाई होना, दिखाई नहीं देना इत्यादि इस शिक्षा में कैसे बच्चों की विद्यालयी वातावरण

में थोड़ा बदलाव कर विशेष प्रशिक्षित शिक्षक के हारा सहाय उपकरण की मदद से शिक्षा दी जाती है।

समावेशी शिक्षा का आवश्यकता निम्नलिखित है-

- i) इससे विशेष बच्चों को मुख्यधारा से जीड़ा जा सकता है।
- ii) सामान्य बच्चों की तरह उन्हें भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिया जाता है।
- iii) उनमें हीन जावना पनपने से रोका जाता है।
- iv) उनके अंदर की प्रतिभा को निर्गत भा जाकर सकता है।
- v) उनके लिए सहायक उपकरण की व्यवस्था किया जा सकता है।
- vi) वे भी सामान्य, शुश्राहाल और सफल प्रिंटिंगी भी सकते।
- vii) वे भी एक जापारन के इसान व नागरिक बन सकते।

\* समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया

आकलन हातों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है आकलन केवल सामान्य हातों तक सीमित नहीं रहता है बर्तक इसकी परिधि में वे सी बातें आ जाते हैं, जो विशेष आवश्यकता रखते हैं आकलन का महत्वपूर्ण कारक है वयोंकि यह समावेशीकरण की प्रक्रिया में भीगदान देता है। साथ ही यह बच्चों में कौशलों का विकास करने में

सहायता करता है विज्ञान निशाचर वाले बच्चों के लिए आकर्षन का विभिन्न प्रक्रिया है। जो निम्न हैं।

- i) शारीरिक निशाचर वाले बच्चों का आकर्षन - जो बच्चे शारीरिक रूप की निशाचर है। उनका शुरूआत में ही आकर्षन कर लेना जरूरी होता है। ताकि उन्हें उस तरह से परीक्षित किया जाए। जिससे उनका सही रूप विकास हो सके।
- ii) अवयव असमर्थता - जो बच्चे कुन नहीं करते हैं, उनसे मौखिक रूप से परीक्षा लेना संभव नहीं है। इसीलिए इनसे लिखित रूप परीक्षा ली जाती है।
- iii) दृश्य असमर्थता - अवयव असमर्थता की अपेक्षा दृश्य असमर्थता वाले की परीक्षण बिल्कुल अलग प्रकार की समस्या प्रस्तुत करता है। इसमें लिखित परीक्षा लेना तो बिल्कुल असंभव है। ऐसे में मौखिक परीक्षा ली जाती है। टेप-ट्रॉकोडिर का प्रयोग किया जाता है। साथ ही बैल लिपि का भी प्रयोग किया जाता है।

शारीरिक विकलांगता या किसी रूप के विशेष वालों के परीक्षण में लचीलापन रुक्षा जाता है। परीक्षण का अवधी कम समय का रुक्षा जाता है। ताकि वे धकावट माफ़सूस नहीं करें या उनपे कोई मानसिक दबाव न परें।

## इकाई - २ विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दलितोंगामी) और समावेशी शिक्षा

\* समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों का संदर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, बिहार का संदर्भ

पश्चिमी देशों ने इस समाज के प्रति लोगों का दृष्टान्त आकर्षित करने के लिए वर्ष 1980 को (अंतर्राष्ट्रीय विकलाग वर्ष) घोषित किया था। बाद में हमारे देश की तकालिक प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने शिक्षा शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, विचारकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और कानूनीविदों, एवं अनुसंधानकर्ताओं को विशेष समाज के प्रति सोचने और उनके प्रति जागरूक, करने की कोशिश की। 30-हीने 1981 को (विकलाग वर्ष) घोषित किया गया ही भारत सरकार विकलाग बच्चों के लिए विभिन्न योजनाएँ जी चला रही थी। सन् 1986 में 21वीं शिक्षा नीति का गठन कराया और (समानता के लिए शिक्षा) नामक अद्याय में इन विशेष कर्ता के बच्चों की शिक्षा, पुनर्वर्ति एवं समाज के लाभ उन्हें जोड़ने के लिए व्यवस्था की। मानव संसाधन मंत्रालय ने अशवक लालकों को सामान्य कर्ता के बच्चों के साथ पढ़ने, कीछने एवं ब्यवहार के हर पहलुओं में अट्टहै तात्पोति के लिए NCERT की 21वीं स्तर पर एक योजना तैयार करने का निर्देश दिया। भारत

सरकार ने देशभर के सभी राज्यों की इस योजना को अपने - अपने राज्यों में क्रियान्वयन करने की जिम्मेदारी सीपी। बिहार राज्य में भी इस योजना को आगे - आगे राज्यों में क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सीपी के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी विभाग की सीपी। इसके बाद से हर योजनाओं में विकलाग बच्चों पर विशेष ध्यान दिये जाने लगे हैं उनके लिए अट्टे, स्कूलों, सहायक उपकरण और विशेष प्रशासन शास्त्रकों का व्यवस्था किये जाने लगे हैं।

क्रान्ति ईडीट से भी यह सीधत हो चुका है कि विकलाग बच्चों को भी आगर सामान्य बच्चों के साथ, सामान्य शिक्षा दिया जाए तो वो भी बहतर प्रगति कर सकते हैं। इसीलिए हमें अवसर दीने की जरूरत है।

विभागीय योजनाओं के बाद भी कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो निम्न हैं -

- i) पढ़ाई में अपद्रव्य होना -
- ii) चाददाश में कीमि होना -
- iii) कक्षा में उत्थान नहीं होना -
- iv) उंत इनाम पाने की तात्परा -
- v) असफलता से डरना -
- vi) शरीर के अंगों के बीच संबंध नहीं होना -
- vii) आत्मोवश्वास का कीमि होना -
- viii) रवय और इसरों को हानि पहुँचाना -

\* विशेष आवश्यकतावाले बच्चे : विविध प्रकार पहचान के लिए तरीके व सीमाएँ

⇒ निशाकता के प्रकार

1.) इंटर्ट निशाकता → पुणि आंशिक

2.) गवण निशाकता → पुणि आंशिक

3.) शाश्विक या अस्ति निशाकता

4.) मानोसक निशाकता

5.) अद्यग्राम अक्षमता

6.) बहुनिशाकता

7.) ऑटिज्म (उपरे आप में छोड़े रहना)

⇒ निशाकते बच्चों की पहचान

1.) इंटर्ट निशाकता - आंशिक अंत्युत्त वाले बच्चे के कुछ बाहरी लक्षण ऐप्टर होते हैं, जिन्हें हम निवासित आधार पर पहचान सकते हैं

→ उंचों में दिशाई देने वाली विकृति

→ ऊंचों की बार-बार सालना

→ बार-बार ऊंचों का साल होना

→ पाठ्य सामग्री को लहूत नजदीक से देखना

→ ऊंचे क्षपकाना

→ ऊंचे से ज्यादा दौर काम करने पर भर दर्द करना

→ वस्तुओं के वर्त्यों से टकराना

→ ऊंचे में पानी चार आना

→ शाम में देखनी में कठिनाई होना

→ प्रकाश से दूर रहना

→ श्यामपट के नजदीक रहना

## 2.) गतिशीलता

- तेजी से बोलना
- तेज सुनना
- कान का बहना
- कान में दृदि की शिकायत करना
- कान चुप्पजलाना
- आवाज की ओर सर की छुकाना
- अतीलेख में आधिक गतिशीलता करना
- शिक्षक को लात सुनी समय उच्चान-पूर्वक उनका देखरा देखना
- बोलने में कठिनाई
- शिक्षक निर्देशों को बार-बार देखरा देखना
- उच्ची आवाज या बहुत धीमी आवाज में बोलना

## 3.) शारीरिक निशावता

- शरीर के किसी संग में विवर्ती होना
- चलने, बैठने, छड़ा होने में कठिनाई होना
- वस्त्रों की पकड़ने, उतारने में कठिनाई होना
- कलम पकड़ने में नहीं बनना
- जो डों में दृदि की शिकायत करना
- झटके से चलना
- शरीर का कोई ऊंगा करा होना
- लकड़ा, पोतियों से प्रभावित होना

## 4.) मानसिक निशावता

- पढ़ाई - लिखाई में विप्रदङ्गा होना
- आदताश में कमी होना
- कश में उच्चान नहीं होना

- तुरंत इनाम पाने की लागत सा रखना।
- असफलता से इन।
- शरीर के अंगों के बीच समृद्धि नहीं होना।
- आत्माविश्वास का कोम होना।
- अवयव एवं इसको को होने पहुँचाना।
- शक्तियों में कोम होना।
- शिक्षक के साथ संबंध स्थापित नहीं कर पाना।
- अधिक अनुभास का जरूरत।
- अन्यथा चंचल होना।

### 5) आधिगम अक्षमता

- पढ़ते समय आंधिगम (पढ़ने) में परेशानी होना।
- शहदों को होड़ के पढ़ना या अपने मन से शहदों को जोड़ देना।
- छड़ाव लिखावट शहदों में उचित अंतर नहीं।
- भाषा का अर्थपूर्ण प्रयोग नहीं करना।
- बोले हुए शहदों का अर्थ नहीं समझ पाना।
- अंकों को गलत पढ़ना, कमा पताट कर पढ़ना।
- ध्यान केंद्रित करने की क्षमता में फ़ैलभी, आसार, अर्ति चंचल, अनावश्यक कार्य करना।

### 6) बहुनिश्चयता - (सब की आधिक विकलांगता)

- 7) ऑटोटज्म - वर्त्ता अपने आप में खोया रहता है।

⇒ निश्चिकता के कारण

i.) जन्म के पूर्व - जन्म अवस्था के दौरान में  
को ऐवास्था के तरह निखल होना या  
कूपीषित होना।

ii.) जन्म के समय - जन्म के समय बच्चे का  
देर से रोना या बच्चे का कम  
वजन होना। बलपूर्वक प्रश्नोत्तर करने या  
बच्चे को चौट लगा जाना।

iii.) जन्म के बाद - समय पर टीकाकरण नहीं  
करना। बच्चे के ऐवास्था पर ध्यान  
नहीं देना। बच्चे में किसी संक्रमण  
बिमारी का फैल जाना।

- डिस्लेक्सिया (Dyslexia) → पढ़ने ~~सुनने~~ में  
कठिनाई

- डिसग्राफिया (Dysgraphia) → लिखने में कठिनाई

- डिसकैलकुलिया (Discalculia) → गणितशास्त्र की शास्त्र  
की कठिनाई

## इकाई-३ जेपड़र विमर्शी और शिक्षा

\* जेपड़र : अवश्याशणा और संदर्भ, पितृसत्ता व नाशीवादी विमर्शी के संदर्भ में जेपड़र विचेद

जेपड़र का अर्थ है - महिला और पुरुष। हमारे समाज में पुरुषों का ज्यादा महत्व दिया जाते आ रहे हैं। समाजशास्त्र के विद्वानों ने पितृसत्ता को प्राचीन काल से चली आ रही एक सामाजिक व्यवस्था के बन्ध में विविकार किया है। इस व्यवस्था में पिता का प्रतिनिधित्व उसका बेटा करता है। पिता के संपत्ति पर बेटा का हक होता है। पिता के अहीं रुहने पर बेटा उस घर का मुख्यमन्त्री कहलाता है। और बेटा का जिम्मेदारी होता है कि वो अपने परिवार का सुरक्षा करें। घर की सभी महिला को उसके कहे अनुसार कार्य करना होता है। पुरुष की ज्यादा ऊँटमान और ताकतवर भास्त्रा भाता है। जबकि यह माना जाता है कि महिला का दायित्व है घर का काम करना, बढ़या का लालन-पीषण करना। शादी के बाद महिलाओं को अपने पिता के घर में कोई अधिकार नहीं मिलता है। सभी घर्मी में भी जिस तरह पुरुष-महिला के काम में बेटवारा किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिला-पुरुष में चोदन्गात किया जाता है।

लेकिन आज के समय में इस परिवृक्षा में काफी तक बदलाव दिया रहा है। आज लड़कों को संगान शिक्षा का अधिकार दिया

गया हैं मोहलाओं के हक में सरकार ने विभिन्न कानून की पारित किया है। बहुत सारी ग्रे-सरकारी संस्थाएँ मोहलाओं के लिए काम कर रही हैं समाज में भी जापरवता आई है। पिता अपने बेटों और बेटियों काबों का समान हक देने का प्रचास कर रहे हैं। इसी तरह सरकार और समाज का युट होकर मोहलाओं के हक में काम करेंगे तो एक दिन वह कुशीरितया समाज से पुरी तरह छत्तमा ही जास्ता। वैसे मोहलाएँ आज हर क्षेत्र में अद्वा प्रदर्शन कर रहे हैं। वे पुरुषों के साथ कंधा-कंधा से - कंधा मिलाकर काम कर रहे हैं। पिता के संपत्ति में मोहलाओं का भी आंदोलन हो, इसके लिए कानून में बना दिया गया है।

\* गर्दों के समाजीकरण में जीपड़े की चीमाका; बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया

गर्दों के समाजीकरण में बचपन, परिवार, समुदाय और मीडिया अहम चीमाका निमाता हैं। गर्दों सबसे पहले परिवार और समुदाय की छुट्टें ही गर्दों लचपन से ही देखते आते हैं कि भी धर का काम करती है। वो ज्ञाना बनाती है, कपड़ा साफ करती है, धर का साफ - सफाई करती है। जबकि पापा बाहर का काम करते हैं।

वो पैसा कमा कर लाते हैं। इसके बचपन से ही उनकी सीधे कैसी ही लगती है कि लड़कों का काम धर का काम करना है और लड़कों का काम बाहर का काम करना है।

जबकि कैसे परिवार में पल रहा बच्चा जहाँ दोनों पात-पातन मिलकर काम करते हैं। कैसे में बच्चे में ऐसी बात नहीं पनपती है। उनके मन में भाइसा-पुरुष की तेकर अस्ति धारणा नहीं बनती है।

भीड़या भी इसमें मुमिका निभाता है। जब बच्चे बड़े होते हैं वो हृतीविजन, मीवाइल का प्रथोग करने लगते हैं। उसमें वो समाचार सुनते हैं। जिसमें तरह-तरह का खबर आते रहते हैं। जिसका असर बच्चों के मस्तिष्क पर पड़ता है।

\* शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जैएडर विचार: पाठ्य-चर्चा, पाठ्यपुस्तक, कक्षाची प्रक्रियाओं, विद्यार्थी-शिक्षक (ट्रटुडेट - दीचर इंटरेक्शन) संबंध के विशेष संदर्भ में

शिक्षा व्यवस्था में भी कही-ना-कही जैएडर विचार दिखता है। जिसे दूर करने का जरूरत है। बच्चों के पाठ्यपुस्तकों में देश भास तो धर का काम करते हुए भाइसाओं को दिखाया जाता है। और ऑफिस का काम करते हुए पुरुषों को दिखाया जाता है। हालांकि अब इसमें कहुत हद तक छद्माव दिखा गया है।

मीहलाओं को बाहर का काम करते हुए दिखाया गया है। कल्पना, चावल, इंदिरा गांधी, मदर टेरेसा, जाँसी की शानी लक्ष्मी बाई इन्डियाद के बारे में पढ़ाने पर जौश दिखा जा रहा है। जिससे छवियों का ~~प्र~~ जैपड़र के प्रति सकारात्मक इंटिरेक्शन बनता है। किंतु अभी भी पुरुषों को धर का काम करते हुए नहीं दिखाया जाता है।

कक्षायी प्राकृत्या में भी जरूरी है कि शिक्षक द्वारा - द्वाराओं के साथ समान घेवहार करें। उन्हें समान अवसर प्रदान करें। उनमें जैपड़र को लैकर कोई नकारात्मक छाते ने पर्याप्त। इस बात का विशेष ध्यान देना चाहिए। पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों छेल-कुद, गीत-संगीत में भी बराबरी का अवसर देने का जरूरत है। जिससे द्वाराओं का आत्मविवरवास होगा।

\* जैपड़र संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की मुमिनता

किसी भी जाति धरणा और कुरीतियों को खट्टम करने में शिक्षा का अहम मुमिनता होता है। शिक्षा सही-जाति का पहचान क्रवाता है। इसी तरह शिक्षा के बारा छवियों को यह बात होता है कि लड़के और लड़कियों दोनों भी कार्य को कर सकते हैं। कोई भी इसान लड़का लड़की होने से पहले इसान होता है। और दोनों को समान अधिकार और कैमिलना ही

योहरा ग्रामीण इलाकों में भीहता शिक्षा पर  
आन्ध्राधिकं जीड़ दैने का जरूरत है। इसके लिए  
सरकार कई तरह की बोधनार्थी भी बनाई हैं।  
वैसे तो सभी बच्चों के लिए शिक्षा मुक्त में  
कर दी गई है। 'सर्व शिक्षा अभियान' के द्वारा  
सभी बच्चों को शैक्षिकी का जोड़ा गया। और  
दाताओं की प्रीति सहित करने के लिए (मुख्यमंगली  
वासिका शाईकल योजना) तथा दाताओं के  
लिए उलगा से शैक्षिकी का लबवश किया गया।  
समाज में भीहता शिक्षा के प्रति जागरूकता  
लाने के लिए सरकार हमेशा प्रयासरन है।